पाठ 4. इंद्रधनुष के रंग

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को इंद्रधनुष के बारे में जानकारी देना है। इसमें विज्ञान के माध्यम से सूर्य प्रकाश में छिपे रहस्यों से अवगत कराया गया है।

पाठ का सारांश

बारिश का मौसम था। बारिश के कुछ देर बाद विद्यालय के मैदान में खेल की कक्षा चल रही थी। बच्चे मैदान में खेल रहे थे कि उन्हें आसमान में इंद्रधनुष दिखाई दिया। वे सभी इसके बारे में जानने के लिए विज्ञान के अध्यापक के पास जाते हैं। विज्ञान के अध्यापक उन्हें बारिश के बाद बनने वाले इंद्रधनुष के बारे में बताते हैं। वे बताते हैं कि वर्षा ऋतु में जब नमी बढ़ जाती है और पानी की छोटी-छोटी बूँदों से होकर सूर्य की किरणें गुज़रती हैं तो प्रकाश की ये सफ़ेद किरणें मुड़कर सात रंगों में विभाजित हो जाती हैं। इन्हीं रंगों से इंद्रधनुष बनता है। फिर बच्चे शिक्षक से पूछते हैं कि क्या इंद्रधनुष के रंगों का निश्चित क्रम भी होता है। शिक्षक उन्हें इंद्रधनुष के रंगों का क्रम बताते हैं। उसके बाद शिक्षक उन्हें इंद्रधनुष बनने के पीछे की पौराणिक मान्यता के बारे में बताते हैं। यह वर्षा के देव इंद्र का इंद्रधनुष है। उसके बाद वे बताते हैं कि वर्षा की बूँदों के अलावा इंद्रधनुष फव्वारों में, जलप्रपातों में भी बनते देख सकते हैं।

अध्यापन संकेत

पाठ का सस्वर वाचन करें। बच्चों से भी एक-एक अंश का वाचन करवाएँ। उन्हें इंद्रधनुष के बारे में संक्षेप में जानकारी दें। बीच-बीच में उनसे पाठ से संबंधित प्रश्न पूछें।

बच्चों से पूछें एवं समझाएँ–

- बच्चों से पूछें, क्या उन्होंने कभी इंद्रधनुष देखा है? यदि 'हाँ' तो इसे देखकर उनके मन में क्या विचार आते हैं?
- उनसे इंद्रधनुष के रंगों का क्रम जानें।
- पाठ के कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ।
- बच्चों से इंद्रधनुष पर आधारित कोई कविता याद करने को कहें।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।